

Mahashivaratri Puja

Date : 9th February 1991
Place : Delhi
Type : Puja
Speech : Hindi & English
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 09
English	-
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	10 - 12
Marathi	13 - 17

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

शिवजी के लिए कहा जाता है कि वे बहुत सरल हैं और एकदम भोले हैं। इसलिए उनको जानना बहुत कठिन है। कुण्डलिनी का कार्य ही देवी का कार्य है। देवी ही इस चराचर सृष्टि को बनाती हैं और अन्त में आपके अन्दर कुण्डलिनी बनकर शिव तक पहुँचा देती है। शिव का पूजन करते वक्त याद रखना चाहिए कि शिव के गुणधर्म हमारे अन्दर विकसित हुए या नहीं। इसलिए सबसे पहले कुण्डलिनी की गति को समझ लेना चाहिए। जब कुण्डलिनी का जागरण होता है तो सर्वप्रथम वो आपके शरीर को स्वस्थ करती है। क्योंकि शरीर का भी स्वस्थ होना जरूरी है। इसलिए आपका चित्त पहले अपने शरीर पर जाता है। शुरूआत में सभी मुझे अपनी शारीरिक तकलीफों, बीमारियों के बारे में बताते हैं। कुछ हष्ट पुष्ट लोग अपनी सांसारिक तकलीफ बताते हैं। जब हम लोग जागृत अवस्था में होते हैं तो हमारा चित्त इन सब चीजों की की तरफ आकर्षित रहता है और इससे हम लोग काफ़ी तकलीफ में रहते हैं। जैसे जैसे आप सहजयोग में आयेंगे आप यही पायेंगे कि आप लोग अपने शरीर की सांसारिक चीजों की या मानसिक दुःखों की ही चर्चा करते हैं। इसलिए पहले ये व्यवस्था की गई थी कि शरीर की तरफ ध्यान ही नहीं देना चाहिए। उसको कष्ट देना चाहिए। अगर आप पलंग पर सोते हैं तो नीचे उतर कर तख्त पर सोईये। फिर तख्त से आप चटाई पर सोईये। फिर आप जमीन पर सोईये। फिर आप पत्थर पर सोईये। फिर आप दलदल में सोईये। ऐसे अनेक तरह से शरीर को पक्का बनाया जाता था जिससे शरीर बाद में कोई तकलीफ न दे। शरीर का आराम किसी तरह से मान्य न था। जैसे एक रात जागरण में यदि तकलीफ हुई तो सात रात जागरण करो, फिर तकलीफ हुई तो चौबीस रात जागरण करो।

उसी प्रकार खाने-पीने का भी। अगर मनुष्य को खाने की बहुत लालसा है तो आप एक दिन उपवास करो, फिर आप सात दिन उपवास करो, फिर आप चालीस दिन उपवास करो। जो आपको चीज़ पसन्द नहीं हो ऐसी चीज़ आप खाओ। और बाकी सब चीज़ आप छोड़ दो। यहाँ तक कि आप अन्न मत खाओ, सिर्फ फल खाओ, फिर अगर आपको कपड़ों का बहुत शौक है तो आप सादे कपड़े पहनो। फिर आप हल्के कपड़े पहनो। फिर आप हिमालय पर जाओ और वहाँ पूरे कपड़े उतार कर ठण्ठ में ठिठराओ। इसी प्रकार किसी को नखरा हो कि मुझे अच्छा घर चाहिए। मैं अच्छे घर के बगैर नहीं रह सकता। जैसे आजकल लोगों को बाथरूम अच्छा चाहिये। आजकल तो सब चीज़ें बहुत जादा आ गयी है। तो उतनी हम लोगों की इच्छायें, प्रवृत्तियाँ बढ़ गयी हैं। तो उधर हमारा चित्त जादा आ गया है। तो कहा जाता था कि अच्छा ठीक है आप बड़े महल में रहते हैं तो अब आप आकर के पहले झोपड़ी में रहो। फिर झोपड़ी में भी बाड़ा लगाते थे। उसमें भी वो अपने को असुरक्षित समझते थे। तो कहा जाता था कि, 'अच्छा, इसमें आप अपने को असुरक्षित समझते हैं, तो ठीक है आप जंगल में आ कर रहो या किसी तीर्थ स्थान में जाओ।' जैसे की कोई निकला तो कांची का आदमी तीर्थ स्थान में जाएगा तो काशी जाएगा और काशी का जाएगा तीर्थ स्थान में तो कांची जाएगा। रास्ते में उसको शेर खा जायेंगे। शेर ने छोड़ा तो सांप काट लेगा।

सांप ने छोड़ा तो मगर खा जायेगा और जब तक वो वहाँ पहुँचते हैं हज़ार में से एकाध आदमी वहाँ पहुँचेगा।

इस तरह से लोगों को छांटते-छांटते और फिर आत्मसाक्षात्कार की बातचीत की जाती थी। सहजयोग में उल्टा हिसाब किताब किया हुआ है। सहजयोग में न तो आपको घर छोड़ना है, न द्वार छोड़ना है, न ही खाना-पीना छोड़ना है, न ही वस्त्र का कोई बन्धन है, आप जैसे हैं ऐसे ही रहें। इसी अवस्था में आपकी कुण्डलिनी जागृत हो जायेगी। कुण्डलिनी इसी स्थिति में जागृत हो जाएगी। पहले तो एक हिरण का चर्म बिछा के उसपे बैठ के, साधना करके फिर आपकी तपश्चर्या होगी। उसके बाद आप बहुत दिन तक भूखे मरियेगा, एकदम आपकी हड्डियाँ निकल आयेगी। तभी फिर परीक्षा होगी, आपको उल्टा टांगा जाएगा। कुएं में डाला जाएगा। दो-तीन बार देखा जाएगा कि किस हालत में आप हैं। उसके बाद अगर आप जिन्दा रह गये तब फिर कहीं जाकर के चर्चा होगी।

अब सहजयोग में उल्टा कारभार है। पहले तो हमने ऊपर का शिखर बना दिया। खोल दिया शिखर, सहस्रार खोल दिया और सहस्रार खोल के अब कहा कि आप ही लोग अपने को ठीक करिये। लेकिन तो भी हम लोग समझ नहीं पाते की सहजयोग बहुत ही कठिन चीज़ है। जितनी सरल है उतनी ही कठिन है, शंकर जी जैसे। क्योंकि हमारे अन्दर अनेक नाड़ियाँ हैं और उन नाड़ियों को खोलने का एक ही तरीका है कि हमारा चित्त जो है वो इधर-उधर न उलझे। तो सहजयोग में ये तो कोई नहीं बताते कि तुम खाना-पीना छोड़ दो। तुम उपवास करो और तुम जाकर हिमालय में ठण्ड में बैठो। ये कोई नहीं बताता। लेकिन क्या करना चाहिए जिससे हमारी प्रगति हो? तो सबसे पहले हमें अपनी तरफ अन्तरमन करके विचार करना चाहिए कि यह मैं क्या कर रहा हूँ? जैसे कि अब आप कहीं गये और आपने देखा कि आपको सोने की जगह नहीं मिली, तो फौरन आप शिकायत करना शुरू कर देंगे कि, 'माँ हमें सोने की जगह नहीं मिली।' उस वक्त ये सोचना चाहिए, कि 'मैं ऐसा क्यों कह रहा हूँ? क्योंकि मैं अपनी शरीर के बारे में चिन्ता कर रहा हूँ कि मुझे सोने की जगह नहीं मिली। मुझे ठीक से जगह नहीं मिली और मैं अपना चित्त इसी में डाले जा रहा हूँ।' अब उस वक्त में ये सोचना चाहिए कि 'अच्छा हुआ कि मुझे जगह नहीं मिली। अब सो जैसे सोना है। अपने शरीर की ओर देखे नहीं। सो अब। यहीं सो। यहीं सोना होगा, तू सहजयोगी है। तुझे सोने के लिए अच्छी जगह क्यों चाहिए? दुनिया में कितने लोग हैं जो रास्ते पर सो जाते हैं। तू कौन बड़ा भारी हो गया कि तुझे सोने के लिए अच्छी जगह चाहिए? और लोग तो खड़े-खड़े भी सो जाते हैं। तू खड़े-खड़े क्यों नहीं सोता और फिर सोना भी क्या जरूरी है। अपने को समझा क्या है तू?' ऐसे अपने शरीर से प्रश्न पूछना चाहिए।

एकदम आफ़त आ जाये कोई एक बार खाना न खाये तो। मैंने देखा है कि आफ़त आ जाती हैं लोगों पर अगर एक बार खाना न मिले। अगर एक दिन खाना नहीं मिले तो बहुत अच्छा सोचना चाहिए 'अच्छा हो गया। मैं देखता हूँ तुझे क्या होता है तेरा। तू मर जायेगा क्या?' ऐसे शरीर को धिक्कारना चाहिए। खुद ही अपनी तरफ से शरीर को धिक्कारना चाहिए। आजकल तो बहुत ही ज़्यादा शरीर के चोचले निकल आए हैं। जैसे कि ये हमने कपड़ा पहना, तो उसका मैचिंग होना चाहिए। इस तरह की आधुनिक चीज़ें निकल आई हैं और उसके जो परिमाण है वो इतने ज़्यादा कृत्रिम हैं कि हम लोगों को समझ नहीं आता कि हम लोग इस कृत्रिमता के पूरी तरह से गुलाम हुए जा रहे हैं। इसका मतलब ये नहीं कि आप विक्षिप्त हो जायें। इसका मतलब ये नहीं कि आप अजीब से कपड़े पहन कर घूमिये और इसका मतलब ये भी नहीं कि आप हिप्पी हो जाएं। समझ लीजिए कि किसी स्त्री को एक मैचिंग ब्लाऊज नहीं

मिला तो उसको तो लगता है कि वो गई काम से, बिल्कुल खत्म। पहले जमाने में कोई मैचिंग पहनता ही नहीं था। अब यदि उसे मैचिंग स्वेटर नहीं मिला तो बस आ गई आफ़त। कौन देखता है आपको कि क्या पहने हैं आप? और आप ऐसी कौन सी विभूति हैं कि आपको देखने से किसी का आज्ञा चक्र खुल जाएगा? या किसी का कोई यंत्र खुल जायेगा? की कोई ऐसी बात हो जाएगी। कुछ भी नहीं। उल्टे आपको देखने से तो कोई पकड़ ही जायेगा आदमी। कभी-कभी तो मैं आँख झुका के चलती हूँ। लोग कहते हैं कि, 'माँ, आप आँख क्यों झुकाते हों?' ठीक है, चलने दो। लेकिन हिम्मत भी करनी पड़ती है कि भई, ये आँख है इसको तो काम करना ही है और इसके काम बहुत है। लेकिन कलियुग में इतना आघात, इतना तो कभी नहीं हुआ।

इसी प्रकार कोई एक भी चीज़ शुरू हो जाए। अब जैसे विलायत में है कि आपके बाल बिल्कुल उलझे होने चाहिए। तो अब सब ऐसे बाल उलझे घूम रहे हैं। तुम सहजयोगी हो। तुम विशेष लोग हो। तुम ऐसे क्यों कर रहे हो? अपने को पूछना चाहिए कि 'मैं ऐसे क्यों करता हूँ? मैं अपने शरीर का इतना आराम क्यों देखता हूँ? मैं दुनिया के लोगों के साथ अपने को क्यों ऐसे बनाना चाहता हूँ। उसी तरह से मैं क्यों रहना चाहता हूँ। मैं तो एक विशेष हूँ।' पर विशेष कैसे होंगे? अगर आप कहीं गये। तो कमरे में सारे इधर पानी फेंक दिया, हम विशेष हैं। या कहीं भी बैठ के खाना खा लिया, हाथ नहीं धोये, हम विशेष हैं। विशेष का मतलब ये कि आपमें ये जो चित्त की चल-बिचल है उसे रोकना है। चित्त को लीन करना है चैतन्य में। फिर चित्त अगर इधर-उधर जाता रहे तो वो चैतन्य में कैसे लीन होगा?

आपके हृदय में जहाँ शिव जी का वास है वहाँ चार नाड़ियाँ हैं। उसमें से एक नाड़ी मूलाधार तक जाती है और उससे आगे नर्क है। तो कुछ लोग यही कहते हैं कि इसमें क्या खराबी है? लेकिन आप सहजयोगी हैं, आप नर्क काहे को जा रहे हैं? आपका रास्ता बन गया अब नर्क की ओर क्यों जा रहे हैं? तो अपनी ओर चित्त में ध्यान देना चाहिए कि मुझे ये वासना क्यों हैं मेरे अन्दर? क्यों हैं? किसलिए? जो मुझे नर्क की ओर ले जा रहे हैं। मैं तो एक कदम ऊपर रखे हुए हूँ और एक कदम कब्र में रखे हूँ। या तो कब्र में बैठ जाओ या ऊपर ही रह लो। अब चित्त जो है उससे कहना चाहिए कि तू कहाँ भाग रहा है? नर्क की तरफ जाना चाहता है क्या? उसकी दूसरी नाड़ी है, वो नाड़ी हमें इच्छाओं की तरफ ले जाती है। इसलिये बुद्ध ने साफ-साफ कहा था कि कोई भी इच्छा करना यही हमारी मृत्यु का कारण है। इसलिये हम बुढ़े हो जाते हैं और इसलिये हम बीमार पड़ते हैं। क्योंकि हमें इच्छा होती है। इसलिये इच्छा हमारी बिल्कुल खत्म होनी चाहिए। लेकिन वो खत्म नहीं होती। एक शुद्ध इच्छा मात्र रहनी चाहिए। वो कैसे हो? शुद्ध इच्छा इस तरह हो सकती है, कि आप सोचें मुझे इसकी इच्छा क्यों हो रही है? इस इच्छा की ओर मैं क्यों दौड़ा जा रहा हूँ? ऐसी मैंने अनेक इच्छाएं की, उससे मुझे क्या फायदा हुआ। तो जो कुछ भी मिला है उसी में आनन्द पा लेना ही एक सहजयोगी का कर्तव्य है। किसी को इच्छा हुई कि मैं माँ के बिल्कुल सामने जाकर बैठूँ या किसी की इच्छा हुई कि हम पहले वहाँ जाकर खड़े हो जायें। ऐसी इच्छा क्यों हुई। क्योंकि अज्ञान में यह नहीं जाना कि माँ हर जगह हैं। कहीं जाने की जरूरत क्या है? तो शुद्ध इच्छा की जब आप इच्छा रखें तो जब कुण्डलिनी चढ़ती है तो ये जो इच्छा की नाड़ी नीचे की तरफ मुड़ी हुई है उसकी ऊर्ध्वगति हो जाती है। उसमें शुद्ध इच्छा भर जाती है। इच्छा मनुष्य करता है इस विचार से कि इससे मुझे सुख मिलेगा, आनन्द मिलेगा। पर मिलता कुछ नहीं।

तो इस इच्छा को जो है आपको आनन्द में लीन कर देना चाहिए। क्योंकि शिव का तत्व जो है, आनन्द का तत्व है। उनका स्वभाव आनन्द है। इसलिए हर एक चीज़ में आनन्द खोजना चाहिए। तब किसी चीज़ की त्रुटि ही नहीं लगेगी। दोष देखना या हर एक चीज़ में, ये ऐसा होता तो अच्छा होता, बहुत लोगों की आदत है मैंने देखा। अब रास्ते से जा रहे हैं, तो कहेंगे कि यहाँ पर उन्होंने फूल क्यों नहीं लगाया? फिर कहेंगे कि यहाँ पर से मार्ग दिखाने का ठीक से क्यों नहीं लगाया? ये रास्ता ऐसे मोड़ पे क्यों नहीं ले आये? अरे बाबा, आप म्युनिसिपाल्टी में हैं? आपको क्या करना है? जो है सो है। आप क्यों बड़बड़ कर रहे हैं? लेकिन दूसरों के बारे में हमेशा कहेंगे। इस में ऐसा करने से ठीक होगा। उसमें ऐसे करने से ठीक होगा। वो जो आप सोच भी रहे हैं वो कार्यान्वित ही नहीं हो सकता। आपका कोई मतलब भी नहीं है उससे।

अब जैसे बहुत से लोगों में होता है, सिनेमा में गये। उसमें कोई सीन दिखा रहे हैं, कि एक आदमी जा रहा है और अब वो किसी पहाड़ी से गिरने वाला है। तो लोग कहेंगे, 'अरे अरे, कहाँ जा रहे हैं तुम? गिर जाओगे।' अब वो तो सिनेमा में जा रहा है। वो क्या तुम्हारी बात सुन रहा है क्या? उसी तरह से हर एक चीज़ का ठेका लेकर बैठते हैं और इस तरह से अपनी बुद्धि में भी पूरी तरह एक विचारों की श्रृंखला बना देते हैं। लेकिन जो कुछ आप देखते हैं वो देखना मात्र हो गया। एक कटाक्ष में भी निरीक्षण हो जायेगा और चित्त सा आपके अन्दर बन जाएगा। लेकिन वो देखना नहीं होता। उसे निरंजन देखना कहते हैं। उसमें कोई रंजना नहीं होनी चाहिए। ना उसके प्रति रिअॅक्शन ही नहीं होनी चाहिए। बस देखो, इस रिअॅक्शन का क्या फायदा? वो ही जैसे मैंने बताया कि सिनेमा में कोई आदमी कुछ कर रहा है। तो कह रहे हैं कि तुम ऐसे मत करो। कोई सुन रहा है क्या तुम्हारा? तो निरंजन देखना ये भी शिव का ही तत्व है। शिव के स्थान पर भी पहुँच गए और उनके मूर्ति के दर्शन भी हो गए, किन्तु जब तक उनका प्रकाश हमारे अन्दर नहीं आया तो सब व्यर्थ ही है।

अब तीसरी नाड़ी है उसमें प्रेम उभरता है। प्रेम माने मेरा बेटा, मेरी बहन, मेरा भाई, मेरा बाप, मेरा पति सब दुनिया भर की रिश्तेदारी। इसमें भी बहुत लोग उलझे रहते हैं। सहजयोग में आने के बाद भी मैं सालों तक देखती हूँ वो छूटता ही नहीं उनका। वही वही बाते, वही वही बाते। 'मेरे भाई का ऐसा हुआ, तो मेरे बहन का वैसा हुआ, मेरा फलाना ऐसा, मेरा ठिकाना ऐसा। मेरे लड़के ने ऐसा किया, तो लड़की ने ऐसा किया।' अब ये कहना कि ये रिश्तेदारी वृथा है, तो ये तो बात ठीक नहीं। तो ऐसा ममत्व कि अपने बच्चों के लिए आप किसी का मर्डर भी कर दें, किसी को खत्म भी कर दें। कुछ भी कर सकते हैं इस ममत्व के लिए। कोई पत्नी के लिए, कोई प्रेयसी के लिए, तो कोई पति के लिए, इस कदर उसमें आदमी अपने जीवन को व्यर्थ करता है और उसके बाद देखते हैं कि जिनके लिए इतना किया वो ही आपके दुश्मन हैं। वो ही आपको सता रहे हैं। सबसे ज्यादा दुःख वो ही दे रहे हैं और आपको और भी ज्यादा दुःख इसलिए होता है कि इन्हीं के लिए हमने इतना किया और इन्होंने हमारे लिए क्या किया? अगर किसी के उपर जरा सा उपकार किया और उन्होंने आपको तकलीफ़ दी तो और भी दुःख लगता है कि, इसके लिए इतना करने पर इसने ये किया। तो पहले जमाने में कहते थे कि सबको त्याग दो। घर त्यागो, बच्चों को त्यागो, बीबी त्यागो, सब छोड़छाड़ के जंगल में जाकर एकांतवास करो। सहजयोग में ऐसा नहीं है। सहजयोग में ये हैं किसी को नहीं त्यागना है। सबको अपनाना है। क्योंकि सहजयोग एक व्यक्तिगत कार्य नहीं कि आप जा कर

एकान्त में बैठ गए और तपस्या की और बड़े ऊँचे हो गये। तो क्या फ़ायदा हुआ। आप अवधूत बन गये तो क्या फ़ायदा हुआ। एक ऐसा आदमी हो जो अच्छा भाषण दे सकता है। हो सकता है कि थोड़ी बहुत चैतन्य की भी वर्षा कर सकता है। पर उससे सारा संसार तो ठीक नहीं हो सकता। हमें तो सारे संसार को ठीक करना है। तब ये सोचना चाहिए कि मैं क्यों अपनापन सिर्फ़ थोड़े ही सीमित लोगों में रखता हूँ? अब उसकी भी वजह है।

एक साहब थे, कहने लगे, 'वो मुझे बहुत अच्छे लगते हैं।' मैंने कहा, 'क्यों?' कहने लगे, 'उनके बाल बहुत अच्छे हैं।' तो मैंने कहा कि, 'आपको बाल अच्छे लगते हैं कि वो अच्छे लगते हैं?' फिर कोई कहेंगे कि, 'साहब, वो उनका हमारे साथ बर्ताव बहुत अच्छा है।' कोई अगर मिठी-मिठी बातें करते हैं तो वो अच्छे लगते हैं। कोई अगर ऐसे कपड़े पहनते हैं तो वो अच्छे लगते हैं। फिर 'ये हमारे दिल्ली के रहने वाले हैं।' फिर दिल्ली के बाद होगा कि नहीं भाई दिल्ली में तो रहते हैं पर ये पुराने दिल्ली वाले हैं तो और भी नज़दीक। फिर ये सब्जी मंडी के हैं। फिर सब्जी मंडी में जो हमारा बैल हमने जिससे खरीदा था वो और भी नज़दीक हो गये। और पता नहीं कहाँ तक चलता है। इनका नाई और हमारा नाई एक। और बड़े गले मिलेंगे, वा, वा! फिर तो मंबई वाले हैं, दिल्ली वाले हैं, फलाने हैं, ठिकाने हैं। अरे, आप अब विश्व के नागरिक हो गये। अब कहाँ बम्बई, कहाँ दिल्ली और कहाँ मद्रास! ये अगर आपके दिमाग में अभी भी बैठा हुआ है तो अभी आप सहजयोग को समझे नहीं। ये कब होगा? जब आपका ममत्व करुणामय नहीं होता है। करुणा के सागर, दया के सागर। करुणा के सागर में लीन होना चाहिए, तब फिर बराबर समझ में आयेगा कि किसे क्या समझना चाहिए? किस के साथ क्या करना चाहिए? और अछूता कैसे रहना चाहिए?

मैंने बहुत बार उदाहरण दिया है आपको की एक पेड़ में गर पानी छोड़िये तो उसका जो सत्व है वो पेड़ के हर शाखा में, हर पत्ते में, हर फूल में, हर फल में जाता है और लौट आता है। और नहीं लौटे तो वो उड़ जाता है। लेकिन अगर वो एक फूल में ही फँस जाये तो वो पेड़ भी मर जायेगा और फूल भी मर जायेगा। तो जिसे निर्वाज्य प्रेम कहते हैं, जो देवी के एक वर्णन में कहा जाता है कि उनका प्रेम निर्वाज्य होता है। और वो जब किसी के लिए कुछ करती हैं तो फिर उन्हें यह नहीं ख्याल रहता कि ये कुछ किया गया या हुआ और उसने ऐसे क्यों किया? ऐसे नहीं करना चाहिए था। हो गया, गया, खत्म। वो चिपकता नहीं दिमाग में। और रात दिन वही गुनगुन नहीं लगी रहती। कोई भी चीज़ में उलझता नहीं मन क्योंकि वो करुणामय हैं। करुणा के सागर में लीन हो गया। और करुणा के सागर में जो लीन हो जाता है वो बस। अब कोई आ गया, उसको कोई तकलीफ है तो इसकी तकलीफ ठीक कर दो। अब वो जा कर बाद में छूरा लेकर भी आये, चाहे कुछ करे, ये विचार नहीं आता। तकलीफ हैं न आप ठीक कर दीजिए। इनको ये परेशानी है न, ठीक कर दीजिये। हालांकि मैं जानती हूँ कि कुछ कुछ परेशानी में कोई अर्थ नहीं है, लेकिन तो भी बहुत गंभीरता से उसको सुनती हूँ कि, 'भाई क्या परेशानी है, बताओ। हाँ, फिर ऐसा है। फलाना है। छोटी-छोटी चीज़ें भी कोई बताये।'

अपने अपने दायरों से लोग मिलते हैं। उनके दायरे में मैं नहीं उतर पाती। अगर वो मेरे दायरे में नहीं उतर पा रहे हैं तो ये उनका दोष नहीं। उनको उतरना चाहिए। उनको इसी दायरे में उतरना चाहिए, जिसे करुणा कहते हैं। करुणा, करुणा के लिए होती है। वो किसी काम से, किसी मतलब से, किसी रिश्ते से नहीं होती। कोई होगा बड़ा आदमी,

कोई होगा छोटा आदमी, कोई होगा रास्ते पर पड़ा हुआ भिखारी, कोई भी हो। करूणा ऐसी चीज़ हैं की वो जैसे की कहीं आपने देखा है की समुद्र है, कहीं भी गढ़ा हो जाये, पानी भर देता है। कहीं भी कोई त्रुटि हो, उसको भर देगा। इस तरह से करूणा का स्वभाव ही है की उसे दिखा की इनको ये तकलीफ हैं, तो अच्छा, चलो इसके आँसू पोंछ दो, उसके आँसू पोंछ दो, उसकी तकलीफ निकाल लो। वो इसलिये नहीं की कुछ उसे माँगना है, लेना है, मतलब नहीं। सिर्फ इसलिये की वो स्वभाव ही है। पानी का स्वभाव, सागर का स्वभाव।

तो वो 'स्व' भाव होने के लिए, स्वभाव शब्द भी कितना सुंदर है। स्व माने आत्मा। आत्मा का भाव। जब वो आत्मा का भाव आपके अन्दर आ जाये सिर्फ करूणा, फिर ये सब चीज़ टूट जायेगी कि दिल्ली रहने वाले, बम्बई रहने वाले, फलाना, ठिकाना, कुछ याद नहीं रहता। उसका महत्व नहीं रहता और हर आदमी क्या है वो जरूर आपको याद रहेगा कि ये कौन है? इसको कौनसी तकलीफ है? एकदम देखते ही याद आ जाएगा। नजर आपकी कहाँ गई? नजर अगर यह टूट रही है, कि दिल्ली वाला कौन है, कलकत्ते वाला कौन है। अगर ये नजर आपकी टूट रही है, कि ये करूणा कहाँ बही चली जा रही है। किस की ओर जा रही है भाई? किसकी ओर खिंच रही है मुझे। तो पता होगा कि कोई दुःखी आदमी है। कोई साधक बहुत बड़ा साधक होता है। एकदम हृदय खिंच जाना चाहिए उस आदमी की तरफ और ये करूणा आपको सुमति भी देती है और स्मृति भी देती है। क्योंकि जितनी निकटता करूणा से आती है, उतनी किसी भी रिश्ते से नहीं आती। ऐसी विशेष चीज़ है करूणा और इस करूणा में अपने को लीन कर लेना। इस ममत्व को लीन कर लेना ही सहजयोग में उन्नति का मार्ग है। क्योंकि मैंने कभी नहीं कहा कि आप अपने बाल-बच्चे छोड़ दो, घर छोड़ दो और घर से निकल के आप अपना जितना पैसा मुझे ला कर दो। घर बेच दो, बिबी को भी बेच दो बच्चों को बेच दो और सब पैसा मुझे दे दो। ऐसे ही कहते हैं न साधु-संत, जो आजकल निकले हैं। लेकिन ये उल्टे हैं। सहजयोग हैं। आप जैसे भी हों जहाँ भी हों, अन्दर ही अन्दर बढ़ते जाओ। वो अन्दर देखे बगैर तो यह नहीं होगा। तो फिर ये सोचना है कि क्या मैं करूणामय हूँ? किसी को अगर कुछ है और उसे यह कहा इस बार नहीं हो सकता, तो बहुत बुरा मान जाते हैं। माने सारा ममत्व अपने ही बारे में हो। 'मुझे क्या मिलना है? मैं क्या पाऊंगा? मुझे क्या लाभ होगा?' लेकिन ममत्व बाहर नहीं। कौन, किस दशा में, कैसा भी हो करूणा अपना रास्ता खुद ही टूट लेती है बड़ी सुन्दरता से और बड़ा आनन्ददायी है। करूणा का पाना, उसमें बहना और करूणा में अनेक तरह के कार्य होना, आनन्ददायी तो है लेकिन उस आनन्द में लोभ नहीं होता कि ये आनन्द मैं बार-बार पाऊँ। उसकी प्रचीति, कॉन्शसनेस नहीं होती। कर दिया, कर दिया। हो गया, हो गया। जैसे संगीत को सुन लिया, मजा आ गया, वहीं खत्म हो गया। उसी तरह से कोई काम है, कर दिया, खत्म। लीन हो जाती है।

अब चौथी जो हमारे अन्दर नाड़ी है वो अत्यन्त महत्वपूर्ण है हृदय में और वो चौथी नाड़ी कुण्डलिनी के जागरण से ही जागृत होती है और बाई विशुद्धि से निकल के और मस्तिष्क में जाकर के कमल को खिलाती है। जब हमारा चित्त इन सब चीज़ों में लीन हो जाता है, तो इस कमल में जीव आ जाता है, इसमें शक्ति आ जाती है या ऐसा समझ लीजिए जैसे किसी पौधे में पानी पड़ जाये तो वो जैसे अपने आप बढ़ता है इसी प्रकार ऐसा शुद्ध चित्त जिस मनुष्य का हो जाता है उसके हृदय की कली खिलती है और वो कमल रूप हो कर के सहस्रार में छा जाता है। फिर उसका सौरभ, उसका सुगन्ध चारों ओर फैलता है। और ऐसा मनुष्य एकदम नतमस्तक हो जाता है, एकदम

नतमस्तक हो कर के सबके सामने झुका रहता है। कोई अगर कहता है कि आपने बड़ा मेरा काम कर दिया, बड़ा चमत्कार कर दिया, तो वो चीज़ उसे छूती नहीं। जैसे कि आनन्द की लहरें बाहर की ओर तट पे जाकर के नाद करती हैं, किंतु वापस नहीं लौटती। उसी प्रकार जिस मनुष्य की ये स्थिति हो जाती है उसका सारा कार्य बाहर को निनाद करता है। आवाज करता है। उसका असर बाहर दिखाई देता है। तट पर। उसके अन्दर उसका कोई भी परिणाम नहीं आता। खयाल भी नहीं आता, विचार भी नहीं आता।

अब आप लोग कभी कभी आपने अभी आगत-स्वागत गाना शुरू किया, तो मैंने सोचा किसी और का कर रहे हैं क्या? मैं इधर-उधर देख रही थी। किसके लिये गा रहे हैं? किस का स्वागत कर रहे हैं? मुझे डर लगता है कि कभी मैं भी आपके साथ गाने न लग जाऊं। कभी आप लोग मेरा जयजयकार करते हैं तब तो मुझे और भी ज्यादा डर लगता है कि मैं भी न कहीं 'जय माताजी' शुरू करूँ। वाकई ऐसे। छूता नहीं। जो भी आप कहते हैं, जो भी आपके निनाद हैं वो और दूसरे तट पर जा कर छू जाएंगे। मेरे तक छूते ही नहीं। मुझे आते ही नहीं। उससे हो सकता है, अन्दर बैठे देवी-देवता खुश हो जायें और चैतन्य को बहायें या कुछ करें। उस तट पर पहुँच सकता है। पर जहाँ तक मेरा सवाल है, मुझे कुछ उसका आभास भी कभी नहीं होता कि आप मेरी जयजयकार गा रहे हैं। मैं शायद वहाँ हूँ ही नहीं। ये दशा है शायद। अभी इतनी पोषक ना हो आप लोगों के लिए। लेकिन एक बात जरूर है की आप जब स्तुति गाते हैं, देवता खुश होते हैं, आपके अन्दर के देवता भी प्रसन्न हो जाते हैं और आपके लिए अनन्त नाड़ियों से कितने तो भी तेजःपुंज ऐसे प्रकाश के किरण आपके अन्दर छोड़ते हैं। फोटोग्राफ्स में देखा होगा आपने। कितनी मेहनत करते हैं आपके लिए। तो आपके लिए भी बहुत आवश्यक है, कि वो जब हमारे लिए इतनी मेहनत कर रहे हैं तो हमें भी इस शुद्धता को पाना चाहिए। तो पहले जिस शरीर को हम धिक्कार रहे हैं, जिसको हम मान नहीं रहे, वो ही शरीर जा कर के एक यज्ञ हो जाता है। यज्ञ माने ऐसे कि अब हमारा शरीर है, हो रही है तकलीफ, तो ये तो तकलीफ होनी ही है, क्योंकि ये यज्ञ है न! अच्छी बात है। जैसे की काष्ठ का जलना यज्ञ में जरूरी है, उसी तरह इस शरीर का भी जलना यज्ञ में जरूरी है। लेकिन सहजयोग में सबसे बड़ी बात ये है कि ये जो कृत युग शुरू हो गया है, आपके पूर्व पूण्य से, आपको बहुत तकलीफ होती नहीं खास! सब चीज़ सामने आ के खड़ी हो जाती है। सब साक्षात्कार होते रहता है। आप कहते हैं चमत्कार हो रहा है। सब चीज़ आपको सुलभ में मिल जाती है। बहुत से काम आपके सरल-सहज हो जाते हैं। शोभना-सुलभ गति कहा जाता है कि आपके शोभायमान इस तरह के जीवन में अत्यंत सुलभता से आप इसे प्राप्त कर सकते हैं। कोई भी अशुभ काम करने की, अशोभनीय काम करने की जरूरत नहीं। तो ये एक इस तरह की बड़ी सूक्ष्म माया भी है। उसमें यह नहीं सोचना चाहिए कि यह सारे चमत्कार हमारे लिए इसलिये हो रहे हैं क्योंकि हम कोई बड़े भारी सहजयोगी हैं। लेकिन ये सोचना चाहिए कि ये चमत्कार इसलिए हो रहे हैं कि हमारे अन्दर विश्वास-परमात्मा के प्रति, शिव के प्रति और कुण्डलिनी के प्रति दृढ़ हो जायें। इसलिये चमत्कार हो रहे हैं और इसको दृढ़ता से करने का कार्य यही है कि हम अपने चित्त को शुद्ध करें क्योंकि शिव चित्त स्वरूप हैं। उनके चित्त की शक्ति को चित्ती कहते हैं। वो चित्त हैं। माने कि ये जो चैतन्य चारों तरफ हैं, आप जानते हैं, उस चैतन्य का जो चित्त है, वो शिव का प्रसाद है। जो शिव का तत्व है। माने सारे संसार में उनका चित्त फैला हुआ है और जब आप कहते हैं कि चमत्कार हो गया, ये चीज़ घटित हो गई तब ये जान लेना चाहिए कि ये जो चित्त है, जिसे हम चित्ती कहते हैं, उसने ये कार्य किया है। अणु-रेणु हर चीज़ में उनका चित्त है लेकिन चित्त

का मतलब ये होता है कि वो साक्षी है। देख रहे हैं और कार्यान्वित जो है वो ब्रह्म-चैतन्य है। लेकिन जैसे कि संगीतकार आप देखते हैं, वो सामने को देखकर बजाता है। उसी प्रकार ब्रह्म-चैतन्य उस चित्त की दृष्टि को देख कर ही कार्यान्वित होता है। उस सृष्टि को, उस चित्ती को ब्रह्मचैतन्य जानता है और वो इस कार्य को तब करता है जब उस चित्ती को देख कर उसे वो ठीक समझता है।

जैसे कि अभी हम आयें। आते ही एक साहब आये थे, देखते ही एकदम हकपका गये। मुझे देखा, मैंने कुछ कहा नहीं, कुछ नहीं। सिर्फ मुझे देख कर के एकदम सकपका गये। उसी प्रकार, वो कुछ कहें या न कहें क्योंकि ब्रह्मचैतन्य ये देवी की शक्ति है और वो कार्यान्वित है और वो उस देखने वाले को जानती है और उस शक्ति की पूरी समय यही लीला है कि उस देखने वाले को खुश रखना है। इसलिये कभी-कभी आप कहते हैं कि माँ ऐसे गड़बड़ क्यों हो गया। इसलिये हो गया कि वो जो चित्ती थी उसका रुख बदल गया था। अगर आप आज शिव की पूजा कर रहे हैं तो ये मैंने जो चार नाड़ियां बताई हैं उसकी ओर नजर करें। और जिस तरह से मैंने बताया है कि अपने को किस तरह से इन चार चीजों में लीन कर लेना चाहिए चित्त को। यह कोई बड़ी गहन बात नहीं है, लेकिन सूक्ष्म है और फिर आप मुझे बताइये कि इस तरह से अन्तर मन कर के जो आपने अपने साथ विचारणा की है, या तपस्या की है, या जो वार्तालाप किया है और जो अपने चित्त को शुद्ध किया है, उससे आप एकदम शिव के सागर में पूरी तरह से डूब गये हैं। ऐसी दशा आप सब पायें यही मेरी एक शुद्ध इच्छा है।

HINDI TRANSLATION

(English Talk)

(Scanned from Hindi Chaitanya Lahiri)

आज का प्रवचन आप सब लोगों के लिए काफी बड़ा था। मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि आप सब लोग शिव पूजा के लिए यहाँ आए और अब, जैसे प्रार्थना की गई है, हम यूरोप में, रोम में भी सत्रह तारीख को शिव पूजा करने वाले हैं। पश्चिम में कभी शिव पूजा नहीं हुई, इसी कारण मैंने निर्णय किया है कि हम दो पूजाएं करेंगे। यद्यपि इतने शीघ्र एक और शिव पूजा करना अत्यन्त कठिन कार्य है।

आज मैंने बताया है कि हमारे हृदय में जहाँ श्री शिव का निवास है, चार नाड़ियाँ हैं और किस प्रकार हमने अन्तर्वलोकन करना है तथा अपने चित्त को नियन्त्रित करना है। क्योंकि सहजयोग में पूर्ण स्वतन्त्रता है कि हम जैसा चाहें बने। जैसे पहले कहा जाता था, कोई बलिदान करने के लिए, कुछ त्यागने के लिए, हिमालय पर जाने के लिए, कपड़े उतारकर ठण्ड में काँपने के लिए तथा अन्य सभी प्रकार के उपद्रव करने के लिए नहीं कहा जाता। शरीर, शरीर के महत्व को कम करना है और इसके लिए आपको चित्त अन्दर स्थापित करके, हर चीज़ में आनन्द प्राप्त करने का प्रयत्न करना होगा। अन्दर चित्त डालना बहुत आसान है क्योंकि आप लोग ध्यान धारणा करते हैं। मान लो आप बैलगाड़ी से जा रहे हैं, कोई व्यक्ति यदि रोल्लज़रायस पर चलता है तो हर समय शिकायत करता रहेगा कि ये क्या पागलपन है, मुझे क्यों बैलगाड़ी से जाना है, भयानक, ये, वो। परन्तु कोई बालक यदि बैलगाड़ी से चलेगा तो वह इसका आनन्द उठाएगा। कहेगा कितनी अच्छी चीज़ है, ऊपर नीचे उछलती है, बहुत अच्छा लगता है, किस प्रकार बैल दौड़ रहे हैं, सुन्दर! बाहर की हर चीज़ को आप अच्छी तरह से देख सकते हैं! क्योंकि वह बालक शिव की तरह से अबोध है। जैसे

आपको अच्छा स्नानागार चाहिए, अच्छा बिस्तर चाहिए और अन्य सभी सुविधा चाहिए, परन्तु यदि आप इसमें मज़ा चाहते हैं तो यह बहुत दिलचस्प है। एक बार मैं लखनऊ में अपने किसी रिश्तेदार के यहाँ रहने गई। उनके यहाँ केवल एक चारपाई थी। वो अमीर न थे। उनकी सारी ज़मींदारी समाप्त हो गई थी। कहने लगे हमारे पास केवल एक चारपाई है, आप चारपाई पर सोना चाहेंगी या जमीन पर? मैंने कहा, "ठीक है, मैं चारपाई पर सोकर देखती हूँ। वह चारपाई नारियल की रस्सी की बनी हुई थी और रस्सियाँ इतनी ढीली थीं कि जमीन को छू रही थीं तथा इस पर सोना भी ऐसे ही था जैसे जमीन पर सोना। रात को मैंने बहुत से चूहों को अपने शरीर पर दौड़ते हुए पाया। मैं उन्हें देख रही थी। लोगों को बहुत चिन्ता हुई, उन्होंने कहा, कि ये चूहे आप पर रेंग रहे हैं और चक्कर लगा रहे हैं। मैंने कहा, हाँ, उसमें से एक तो अभी भी मेरे पैर के नीचे है। वे कहने लगे कि फिर भी आपको घबराहट नहीं हो रही? मैंने कहा, घबराने की कौन सी बात है, मैं तो बस उन्हें देख रही हूँ, मैंने एक साथ इतने अधिक चूहे कभी नहीं देखे। मैं तो इनका आनन्द ले रही थी। फिर वे कहने लगे कि आप ऐसी चारपाई पर सो रही थी, कहीं कल तुम्हारे शरीर पर दर्द न हो जाए। मैंने कहा, नहीं नहीं, मैं तो आनन्द ले रही थी, ये चारपाई तो बहुत अच्छे झूले की तरह से है, इसमें आप झूल सकते हैं। ये बहुत अच्छी है, बहुत ही रुचिकर। अगले दिन मैं बिल्कुल तरोताज़ा थी, वे लोग हैरान थे कि मैं कैसे इतनी तरोताज़ा हूँ।

तो शरीर की ये सब तकलीफें आदि, जिस प्रकार हम हर चीज़ को सुधारते रहते हैं, हर चीज़ के विषय में गिले-शिकवे करते हैं, हर चीज़ की शिकायत

करते हैं, ये सब मात्र मिथ्या हैं। यदि आप किसी गुरु के पास जाते तो सुझाया जाता कि आपको अत्यन्त कठोर जीवन बिताना होगा। अब आपको इतनी तपस्विता की आवश्यकता नहीं है। अब आपको करना क्या है? इन सभी चीजों को आनन्द के सागर में विलीन कर दें, इन सभी सुख-सुविधाओं को आनन्द के सागर में विलय कर दें। अब जीवन के ये जो बनावटी मापदण्ड आ गए हैं, जैसे हमारे बाल बिखरे हुए होने चाहिए नहीं तो आप पिछड़ गए हैं, फैशन के साथ चलना आपके लिए जरूरी है, मैं सोचती हूँ कि ऐसी और बहुत सी मूर्खतापूर्ण चीजें फैशन में हैं और लोग उन्हें इसलिए मानते हैं क्योंकि यही मानदण्ड हैं। आप यदि ऐसा नहीं करते तो लोग सोचते हैं कि यह व्यक्ति ठीक नहीं है या 'ये कितना अजीब व्यक्ति है!' इसका अर्थ ये नहीं है कि आप स्वयं को अजीबोगरीब, हिप्पी या ऐसा ही कुछ और बना लें।

इन मानदण्डों की अधिक चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। इंग्लैंड में मैंने एक दिन देखा कि एक सज्जन बड़े परेशान थे, एक भारतीय सज्जन। मैंने पूछा, क्या हुआ, तुम इतने परेशान क्यों हो? कहने लगा, "मैंने गलती से मांस खाने के लिए मछली खाने वाला चाकू उपयोग कर लिया।" तो क्या? "सभी लोगों ने मुझे देखा।" मैंने कहा, ठीक है, तुमने वो चाकू किसी को घोंपा तो नहीं। कोई बात नहीं यदि तुमने मछली खाने वाले चाकू से मीट खा लिया। तो आप मछली वाला चाकू उपयोग कीजिए। ये, वो सारी मूर्खता। आपके मानसिक सन्तुलन की तुलना में ये चीजें अधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं। तो ये सारी छोटी-छोटी चीजें हमें परेशान कर सकती हैं। इसके विपरीत, मैं कहती, वास्तव में, मैंने खाया क्या? मैंने वास्तव में मछली खाई, बहुत अच्छा। मैंने कोई बन्धन तो तोड़ा। औपचारिक रात्रिभोज की कोई प्रथा तो मैंने तोड़ी। तो यह बहुत अच्छा हुआ। अगली

बार सभी लोग ऐसा करेंगे और सम्भवतः यही फैशन का रूप धारण कर ले। आप यदि इस प्रकार से अपना चित्त डालें, इस प्रकार से कि यह शरीर तपस्या के लिए नहीं है, हवन के लिए है, इसका उपयोग हवन के लिए होना है, यज्ञ के लिए होना है, तब आप अपने शरीर को बखूबी कह सकते हैं कि अब सुधर जाओ। अतः सर्वप्रथम आपने इसकी भर्त्सना करनी है, इसकी सभी माँगों की भर्त्सना करनी है, केवल तभी यह परमात्मा के कार्यों में उपयोग करने की चीज बनता है। मैं कहूँगी कि भारतीयों की तुलना में पश्चिम के लोग इस मामले में कहीं बेहतर हैं, मैं अवश्य कहूँगी। भारतीय सबसे पहले अच्छे कमरे ले लेते हैं। वो तो इसके लिए लड़ने से भी नहीं चूकते? अब शनैः शनैः उनमें कुछ सुधार हो रहा है परन्तु अब भी कभी-कभी वो इस बात का शिकवा करते हैं, कभी उस बात का। मैं नहीं जानती कि किस प्रकार से, परन्तु ये बात मैं अवश्य कहूँगी कि पश्चिम में या आस्ट्रेलिया में लोग इन चीजों की चिन्ता नहीं करते। मुझे याद है, हम एक बार गणपति पुले गए थे, बहुत समय पूर्व। वहाँ पर सोने के लिए कोई प्रबन्ध न थे क्योंकि एम.टी.डी.सी. ने कमरे खाली नहीं किये थे। उन्होंने अगले दिन कमरे खाली करने थे। तो उनमें से (पश्चिमी सहजयोगी) बहुत से उस रात समुद्र तट पर जाकर सो गए। कहने लगे, "हाँ श्रीमाताजी हमने बहुत आनन्द लिया। पूरा चाँद था। हमने वास्तव में इसका आनन्द लिया।"

दूसरी बात ये है कि लोगों में अब भी लिप्साएं हैं। सर्वप्रथम तो हम कह सकते हैं कि इच्छा है, ये प्राप्त करने की इच्छा, वो प्राप्त करने की इच्छा, सभी प्रकार की इच्छाएं। जैसे आपने देखा है इच्छा कभी पूर्ण नहीं होगी और इच्छा यदि पूर्ण हो भी जाए तो भी हम सन्तुष्ट नहीं होते। तो हम अपनी इच्छाओं का क्या करें? इन्हें शुद्ध इच्छा में विलीन

कर दें, कुण्डलिनी की शुद्ध इच्छा में।

तीसरी बात ये हैं कि हमारे सम्बन्धी भी हैं। ये बात मैंने पश्चिमी लोगों में देखी है विशेष रूप से जब उनके विवाह हो जाते हैं तो मैं नहीं जानती उन्हें क्या हो जाता है! अचानक वो सोचने लगते हैं कि अब हमारे विवाह हो गए हैं। तो अब वे रोमियो और जूलियट बन गए हैं, उनसे भी 108 गुणे अधिक रोमांचक! और भारतीय बिल्कुल दूसरी ओर हैं। मेरा अभिप्राय ये है कि उनके साथ भी ऐसा ही होता है। व्यक्ति को समझना चाहिए कि ठीक है, ये एक घटना है, मेरा विवाह हो गया है परन्तु चित्त किसी व्यक्ति विशेष में लिप्त नहीं होना चाहिए। जैसा मैंने बहुत बार बताया है, जैसे पेड़ के रस को ऊपर उठाकर पेड़ के सभी हिस्सों का पोषण करके वापिस आना होता है, यदि यह किसी भाग विशेष से लिप्त हो जाए तो पूरा पेड़ मर जाएगा और उसका वह भाग भी मर जाएगा। तो किसी सम्बन्ध में भी, जो भी आपको देना है, अपनी बहन को अपने भाई को, बच्चों को और अपनी पत्नी को, जो भी आपने देना है वो देना है, परन्तु आपने उनसे लिप्त नहीं होना। तो अपनी लिप्साओं का हम क्या करें? इन्हें करुणा (compassion) में विलीन कर दें। करुणा सागर की तरह है। करुणा का स्वभाव ऐसा है जो सभी खड्डे भरता है और सभी दोषों को दूर करता है। बस इसके अन्दर प्रवाहित होता है।

चौथी नाड़ी आपकी उत्क्रान्ति के लिए है। जब आपका चित्त अत्यन्त पवित्र हो जाता है तो

यह आपकी चौथी नाड़ी की पोषण करता है, जो खिलती है, आपकी बाईं विशुद्धि के माध्यम से उठती है, आपके सहस्रार में प्रवेश करके कमल का रूप धारण करती है, कमलदल का। तब सहस्रार हृदय की सुगन्ध बिखेरने लगता है। इस प्रकार से हृदय और मस्तिष्क का समन्वय घटित होता है। तो ये चित्त स्वयं श्री शिव की शक्ति है, इसी चित्त को 'चित्ती' कहते हैं। सर्वव्यापी शक्ति, चैतन्य के हर कोने में यह चित्त विद्यमान है। जब यह चैतन्य, ये कोने गतिशील होते हैं, तब वास्तव में चित्ती सम्मानित होती है। यह चित्ती जब शान्त होती है तो यह देखती है, मात्र देखती है- प्रतिक्रिया नहीं करती परन्तु ये चैतन्यकण चित्त को इसकी वस्तुस्थिति में देखते हैं और जानते हैं कि यह क्या है और उसी के अनुरूप ये कार्य करते हैं। वे, श्री शिव, मात्र एक दर्शक हैं जो देवी (आदिशक्ति) के कार्य को देख रहे हैं। केवल वही दर्शक हैं और यदि वे नाराज हो जाएं, यदि उन्हें लगे कि मनुष्य उनकी शक्तियों का सम्मान नहीं करते तो वे गतिशील होकर पूरे विश्व को नष्ट कर देते हैं। देवी की पूरी सृष्टि को नष्ट कर देते हैं। अतः यह आवश्यक है कि आप भी उनका साथ दें, इसे कार्यान्वित करें, देवी के कार्य को, ताकि श्री शिव प्रसन्न हों और हम आध्यात्मिकता और सौन्दर्य के एक नए विश्व का सृजन कर सकें।

परमात्मा आपको धन्य करे।

रूपान्तरित

MARATHI TRANSLATION

(Hindi Talk)

(Scanned from Marathi Chaitanya Lahiri)

शिवांच्याविषयी असं सांगितले जातं की ते एकदम भोळे आहेत, खूप सरळ आहेत, त्यामुळे त्यांना समगून घेणं अतिशय कठीण आहे. कुंडलिनीचं कार्य जे आहे, ते देवीचं कार्य आहे. देवीच या चरचर सूट्टीची निर्मिती करते आणि शेवटी आपल्यामध्ये कुंडलिनी होऊन शिवापर्यंत पोहोचवून देते. शिवांचं पूजन होत असतांना शिवांचे गुणधर्म आपल्यामध्ये विकसित आले की नाही. हे लक्षांत ठेवले पाहिजे. यासाठी सर्वांत आधी कुण्डलिनीच्याच गतिला समगून घेतले पाहिजे. जेव्हा कुण्डलिनीची जागृती होते, त्यावेळी ती सर्वप्रथम आपल्या शरीराला स्वाद्य देते. कारण शरीराचं स्वास्थ्य जरूरीचं आहे. आणि यामुळे आपले चित्त पहिल्यांदा आपल्या शरीराकडे जातं. सुरुवातीला सगळे मला हेच सांगतात की मला ही शारिरिक व्यथा आहे, मला हा रोग आहे. किंवा काही लोक शरीराने इष्टपुष्ट असतात, तेव्हा ते मला त्यांची कौटुंबिक व्यथा सांगतात. कारण जेव्हा आपण लोक जागृत अवस्थेमध्ये असतो, तेव्हा आपलं चित्त, या सर्व गोष्टींकडे आकर्षिलेलं असतं. आणि यामुळे आपण लोक बऱ्याच त्रासांत असतो.

जसं जसं आपण सहजयोगांत घाल, तसं तसं आपल्याला हेच दिसेल की आपण आपल्या शरीराची किंवा संसारिक गोष्टीची किंवा मानसिक दुःखाचीच चर्चा करीत असतो. यासाठी पहिल्यांदा ही व्यवस्था केली गेली की शरीराचा पूर्णपणे त्याग केला जाईल. त्याच्याकडे लक्ष देतां नये. त्याला कष्ट दिले पाहिजेत. जर आपण पलंगावर झोपत असलो तर खाली उतरून आपण लकडाच्या पलंगावर झोपा. मग त्यावरून आपण चटईवर झोपा. मग आपण जमिनीवर झोपा. मग दगडावर झोपा. नंतर आपण दलदलीवर झोपा. अशा अनेक प्रकारे शरीराला पक्कं केलं जातं. ज्यायोगे शरीर नंतर त्रास देणार नाही कोणत्याही प्रकारे शरीराचा आराम मान्य केला जात नाही. जसं की, एक रात्र जागरण झालं, तर त्रास झाला, तर सात रात्री जागरण करा, मग त्रास झाला तर चौवीस रात्री जागरण करा. तशाच प्रकारे खाण्यापिण्याचं जर माणसाला खाण्याची खूप लालसा आहे, तर आपण एक दिवस उपवास करा, मग सात दिवस उपवास करा, मग चाळीस दिवस उपवास करा. जी गोष्ट आपल्याला आवडत नाही, ती गोष्ट खा. बाकी सर्व गोष्टी आपण सोडून द्या, इथवर की, आपण अन्ना खाऊ नका, फळबिळं खा. मग जर आपल्याला कपड्यांचा खूप शौक आहे, तर आपण साधे कपडे वापरा. नंतर आपण हलके कपडे वापरा. मग हिमालयावर जा आणि तिथे सर्व कपडे उतरवून थंडीत कुडकुडत रहा. याचप्रकारे कोणाचा असा मखरा असतो की मला चांगलं घर हवं. हल्ली अशा सगळ्या गोष्टी फार जास्त येऊ लागल्या तरा आम्हां लोकांच्या इच्छा आणि प्रवृत्त्या वाढल्या, आमचं चित्त तिथे जास्त लागत जातं. तर असं सांगितलं होतं की आपण मोठया महालांत राहतां तर आतां येऊन आपण झोपडीत रहा. मग झोपडीतही बाज घालत होते, त्यांतही ते आपल्याला असुक्षित समजत होते, तर आतां तुम्ही जंगलांत येऊन उहा किंवा कोण्या तीर्थक्षेत्री जा, जसा काँचीची व्यक्ति तीर्थक्षेत्राला गेली तर काराशाला जाईल, आणि काराशाली गेली तर काँचीला जाईल. रस्त्यांत त्याला वाघ खाऊन टाकेल, चापाने सोडलं, तर साप चावेल. सापाने सोडलं, तर मगर खाऊन टाकेल आणि तिथे पोहोचपर्यंत हजारोंमधून एखादी व्यक्ति तिथे पोहोचेल. अशा रितीने लोकांना कमी कमी करून मग आत्मसाक्षात्काराची विषय काढला.

सहजयोगामध्ये उलटा हिशोब केला आहे. सहजयोगांत तुम्हाला ना घर सोडायचं आहे, ना दार, ना खार्ण पिणं सोडायचं आहे, ना वस्त्रांचा प्रश्न तुम्ही सगळे जसे आहात, तसेच राहायचं आहे. आणि यामध्येच तुमच्या कुंडलिनीचं जाग्रण होणार आहे. या स्थितीतच कुंडलिनी जागृत होईल. पूर्वी मुगाजिन घालून, त्यावर बसून साधना करून मग तुमची तपस्वर्या व्हायची. मग खूप दिवस उपाशी मरायचं, जोपर्यंत तुमची हाड बाहेर यायची, त्यानंतरही तुमची परिक्षा व्हायची, उलट टांगलं जात होतं, विहीरीत टाकलं जायचं तुम्ही कुठल्या स्थितीत असता हे बघितलं जात होतं. दोन-तीन वेळां पाहिलं जायचं की कशा स्थितीत तुम्ही आहात, त्यानंतर कुठे जाऊन चर्चा व्हायची!

आतां सहजयोगामध्ये उलटा कारभार आहे. पहिल्यांदा तर आम्ही वरचं शिखर तयार केलं. त्याला उघडलं-सहस्वार उघडलं, सहस्वार उघडून सांगितलं की आतां आपण लोकांनीच आपल्याला ठीक करा. तरीसुद्धां आम्ही लोक समजू शकत नाही. सहजयोग फार कठीण गोष्ट आहे. जितकी

सरळ आहे, तितकाच कठीण आहे. कारण आपल्या आंतमध्ये अनेक नाड्या आहेत आणि त्या नाड्यांना उघडण्याची एकच पध्दत आहे की, आपलं चित्त जे आहे, ते इकडे तिकडे भटकतां नये. तर, सहजयोगांत हे तर कोणी सांगत नाही, की तुम्ही खाणं पिणं सोडून द्या, तुम्ही उपवास करा आणि हिमालयांत थंडीत बसा.

पण काय केलं पाहिजे, ज्यामुळे आपली प्रगती होईल? तर सर्वात आधी आपल्याला आपल्या अंतर्मनांत जाऊन विचार केला पाहिजे की हे मी काय करतो आहे? जसे आपण कुठे गेलात आणि पाहिलं की आपल्याला झोपायला जागा मिळत नाही, तर ताबडतोब आपण जाऊन तक्रार करायला सुरुवात करणार की श्री माताजी, झोपायला जागा नाही मिळाली त्यावेळी असा विचार केला पाहिजे की मी असं कां सांगतो आहे? कारण माझ या शरीराविषयी मी चिंता करतो आहे की, मला झोपायला जागा मिळाली नाही? मला नीट जागा मिळाली नाही आणि मी माझं चित्त त्यांतच घालत चाललो आहे! आतां अशावेळी असा विचार केला पाहिजे की, चांगलं झालं की, मला जागा मिळाली नाही आता झोपा जसे झोपायचे आहे तसे! आतां इथेच झोपा. आपल्या शरीराला झोपण्यासाठी चांगली जागा का पाहिले? जगांत किती लोक आहेत जे रस्त्यावर झोपतात. तू कोण मोठा लागून गेलास, की तुला झोपायला चांगली जागा पाहिजे. बाकी लोक तर उभ्याउभ्या झोपतात. तू उभ्याउभ्या कां नाही झोपत? आणि झोपणं सुध्दा काय जरूरी आहे? आपल्याला काय समजते आहेस तू? असा प्रश्न शरीराला करा. कोणी एक वेळ जेवळ नाही तर एकदम आपत्ति येणार. जर एक दिवस जेवण मिळालं नाही तर फार चांगलं झालं असा विचार केला पाहिजे. तसं शरीराला धक्कारलं पाहिजे. आज काल तर शरीराचे चोचले फारच जास्त निघाले आहेत. जसं आम्ही हे कपडे घातले तर याचं हे मॅचिंग झालं पाहिजे. अशा तऱ्हेच्या आधुनिक गोष्टी निघाल्या आहेत आणि त्याचे जे परिणाम आहेत ते इतके जास्त कृत्रिम आहेत की आपल्याला समजत नाही की आपण लोक या कृत्रिमतेचे पूर्णपणे गुलाम होत चाललो आहोत याचा अर्थ असा नव्हे की आपण विक्षिप्त व्हा. याचा असा अर्थ नाही की आपण विचित्र कपडे घालून फिराल, आपण हिप्पी व्हाल, असा याचा अर्थ नाही, पण समजून घ्या. एखाद्या स्त्रीला एक मॅचिंग ब्लाऊज मिळाला नाही, तर तिला वाटतं ती कामातून गेली! एकदम खतम! पहिल्या जमान्यांत तर कोणी मॅचिंग घातलच नव्हतं. आतां तर त्याला मॅचिंग स्वेटर मिळालं नाही तर खैर समजा! कोण आपल्याला बघतंय आपण काय घातलंय म्हणून? आणि आपण कोण अशा विभूति लागून गेला की आपल्याला पाहून आज्ञाचक्र उघडेल? उलट आपल्याला बघून कोणा माणसाला पकडच यायची! कलियुगांत जितका आघात झाला आहे एवढा झाला नाही. अशा प्रकारे एखादी गोष्ट सुरु होते. जशी विलायतेत आहे की आपले केस एकदम उल्टे असले पाहिजेत, तर सगळे तसे केस घेऊन फिरतात.

पण तुम्ही सहजयोगी आहांत कोणी विशेष आहांत. तुम्ही असं का करता? मी माझ या शरीराचा इतका विशेष आराम कां पाहाता मी तर एक विशेष आहे. विशेषचा अर्थ हा की आपल्या चित्तामध्ये ही नी चलबिचल आहे, तिला थांबवायचं. चित्ताला लीन करायचं चैतन्यामध्ये पण चित्त जर इकडे तिकडे जात असेल तर ते चैतन्यामध्ये कसं लीन होईल? आपल्या हृदयामध्ये, जिथे श्री शिवांचा वास आहे तिथे चार नाड्या आहेत. त्यामधून एक नाडी मूलाधारापर्यंत जाते आणि त्याच्यापुढे नरक. तर लोण असं म्हणतात, यांत काय वाईट आहे? पण आपण सहजयोगी आहांत. आपण नरकामध्ये कशाला जाता? तर आपल्या चित्ताकडे लक्ष दिलं पाहिजे की, मला ही वासना कां आहे? जी मला नरकाकडे घेऊन चालली आहे. मी तर एक पाऊल वर ठेवून आहे आणि एक कबरीमध्ये. त्याची दूसरी नाडी आहे, ती नाडी आपल्याला इच्छाकडे घेऊन जाते. म्हणून बुध्दांनी साफसाफ सांगितलं होतं की कोणतीही इच्छा करणे हेच आपल्या मृत्यूचे कारण आहे. आपली इच्छा बिलकुल संपली पाहिले. पण ती संपत नाही. फक्त शुध्द इच्छा राहिली पाहिजे. ते कसं होणार? शुध्द इच्छा अशा प्रकारे होऊ शकते की, आपण विचार करा, मला अशी इच्छा कां होते? या इच्छेकडे मी का धावतो आहे? अशा मला अनेक इच्छा झाल्या त्याचा मला काय फायदा झाला? तर, ते कांही मिळतं आहे त्यांतच आनंद मानणं हे एका सहजयोग्याचं कर्तव्य आहे. कोणाला इच्छा झाली की मी आईच्या एकदम नवळ जाऊन बसावं. किंवा कोणाला इच्छा होते की आम्ही पहिल्यांदा तिथे जाऊन उभ राहावं. अशी इच्छा कां झाली? कारण अज्ञानीत हे जाणलं नाही की आई प्रत्येक ठिकाणी आहे कुठे जायची गरज काय?

तर, शुध्द इच्छेची जेव्हा आपण इच्छा करता, तेव्हा कुडालिनी जेव्हा चढते तेव्हा, ही नी इच्छेची नाडी खालच्या बाजूला झुकलेली असते ती उध्वर्गती होते. त्यांत शुध्द इच्छा भरली जाते. इच्छा माणूस करतो या विचाराने की, यावेळी मला सुख मिळेल, आनंद मिळेल, मिळत कांही नाही,

तर, या इच्छेला आपण आनंदामध्ये लीन करायचं आहे. कारण श्री शिवाचं तत्त्व जे आहे. त्यांचा स्वभाव 'आनंद' आहे. म्हणून प्रत्येक गोष्टीमध्ये आनंद शोधला पाहिजे. तर कोणत्याही गोष्टीची त्रुटी वाटणार नाही, दोष बघायचे किंवा प्रत्येक गोष्टीमध्ये हे असं असतं तर चांगलं होतं, खूप लोकांना संवय आहे. तो जो आपण विचार करीत आहांत असं व्हायला पाहिजे, तो कार्यान्वित होऊ शकत नाही. त्याच्याशी जसं, कोणी सिनेमाला जातो, तिथे पहातो की कोणी डोंगरावरून पडणार आहे. तर सांगतो की, 'अरे, तू डोंगरावरून पडणार आहेस'. तर तो सिनेमा आहे. तो काय तुमचं बोलणं ऐकू शकतो? अशा प्रकारे प्रत्येक गोष्टीचा ठेका घेऊन बसतात. आणि अशा तऱ्हेने आपल्या बुद्धीमध्ये पूर्णपणे फक्त विचारशुंखला तयार करतात. पण जे काही आपण बघता ते नुसतं बघतो, ते नुसतं बघणं आलं. एका कटाक्षांतसुद्धा निरीक्षण होऊन जातं आणि आपल्या आंत चित्ताप्रमाणे होतं. पण ते बघण नसतं. त्याला निरंजन पहाणे म्हणतात. त्यांमध्ये कांही रंजन नसतं. त्याबाबतीत कांही प्रतिक्रिया नसते. तर निरंजन बघणं हे सुद्धा शिवाचं तत्त्व आहे. शिवाच्या स्थानावरही पोहोचल्या आणि त्यांच्या मूर्तिचं दर्शनसुद्धा झालं. पण जो पर्यंत त्यांचा प्रकाश आमच्याआंत आला नाही तर ते सगळं व्यर्थच आहे.

आता तिसरी नाडी आहे ज्यामध्ये प्रेम उभारून येतं. 'माझा मुलगा, माझी बहीण, माझे वडिल, माझा नवरा' सगळी जगमराची नाती! यांतही बरेच लोक गुंतून राहातात. सहजयोगांतही वर्षानुवर्षे ते सुटत नाही. त्याच त्याच गोष्टी! आतां हे सांगायचं की ही नाती व्यर्थ आहेत ही गोष्ट ठीक नाही. तर इतकं ममत्व की, आपल्या मुलांसाठी तुम्ही कोणाचा खूनही करून टाकाल- कांहीहीकरून शकाल या ममत्वांसाठी, कोणी पतीसाठी, कोणी पत्नीसाठी अशाप्रकारे माणूस आपलं जीवन व्यर्थ करतो आणि नंतर बघतो की ज्यांच्यासाठी इतकं केलं तेच आपले दुश्मन आहेत. तेच आपल्याला त्रास देत आहेत. सर्वात जास्त दुःख तेच देत आहेत. आणि आपल्याला जास्त दुःख यामुळेच होतं की यांच्यासाठी आम्ही इतकं केलं आणि यांनी आमच्यासाठी काय केलं? पूर्वीच्या जमान्यांत सांगत होते की सगळ्यांचा त्याग करा. धराचा त्याग करा. मुलांचा त्याग करा. पत्नीचा त्याग करा. सगळं सोडून जंगलामध्ये जाऊन एकांतवास करा. सहजयोगांमध्ये असं नाही. सहजयोगांमध्ये कोणाचा त्याग करायचा नाही. सगळ्यांना आपलं करायचं आहे. कारण सहजयोग एक व्यक्तिगत कार्य नाही की आपण जाऊन एकांतात बसले आणि तपस्या केली आणि खूप उच्च झाले तर काय फायदा झाला? आपण अवधूत झालांत तर काय फायदा झाला? हा एक असा माणूस असला तर तो चांगलं भाषण देऊ शकतो. असं होऊ शकतं की थोडी फार चैतन्याची वर्षा करू शकतां. पण त्यामुळे सारं जग तर ठीक होऊ शकत नाही. आपल्याला तर सारं जग ठीक करायचं आहे. तर असा विचार करायचा की मी आपलेपणा फक्त थोड्या लोकांमध्ये सिमीत कां करून ठेवतो?

एका झाडामध्ये जर पाणी सोडलं, तर त्याचं जे सत्व येत ते झाडाच्या प्रत्येक फांदीमध्ये, प्रत्येक फुलांमध्ये, प्रत्येक फळामध्ये जातं आणि परत येतं. आणि परत आलं नाही तर ते उडून जातं. पण जर ते एका फुलांतच अडकलं तर ते फूलही मरेल आणि झाडही. तर ज्याला निर्व्याज्य प्रेम म्हणतात की, देवी जेव्हा कोणासाठी कांही करते तेव्हा त्यांच्या हे लक्षात राहात नाही की हे कांही केलं होतं, असं त्याने कां केलं. करायला नको होतं. ते करूणामय आहे. करूणेच्या सागरामध्ये लीन झालं आहे. ज्याला त्रास आहे असं कोणी आलं की तो म्हणतो याचा त्रास ठीक करा, खरं तर मला माहीत असतं काळजी करण्यांत अर्थ नाही पण त्याचं खूप गंभीरतेने ऐकते. त्यांच्या मध्ये मी उतरलं शकत नाही. तर तो त्यांचा दोष नाही. त्यांना उतरलं पाहिजे. या करूणांमध्ये उतरलं पाहिजे. करूणा करूणेसाठी असते. कांही काम, कारण अथवा नात्यांसाठी नसते. कोणी असेल मोठी असामी किंवा छोटी व्यक्ति किंवा भिकारी, कोणीही असेल, नसा समुद्र कुठेही खडबा झाला की तो पाणी भरून टाकतो. कुठेही कांही त्रुटी असूदे. भरून टाकतो. करूणा यासाठी नाही की त्याच्याकडून मागायचं आहे, घ्यायचं आहे. ती यांसाठी की, तो स्वभावच आहे तो स्वभाव असल्याने 'स्व' म्हणजे आत्मा. आत्म्याचा भाव. जेव्हा तो आत्म्याचा भाव आपल्यामध्ये येईल-फक्त करूणा. मग या सर्व गोष्टी तूटून जातील की दिल्लीत राहणारे -मुंबईत राहणारे वगैरे. कांही लक्षात राहात नाही. कांही महत्व राहात नाही. आणि प्रत्येक व्यक्ति कोण आहे हे जरूर आपल्या लक्षात राहातं. की हा कोण आहे. त्याला काय त्रास आहे, एकदम पाहिल्याबरोबर लक्षात येईल. आपली नजर कुठे गेली? नजर जर हे शोधात असेल की दिल्लीवाला कोण आहे. कलकत्तेवाला कोण आहे, जर ही आपली नजर शोध घेत असेल की करूणा कुठे कुठे चालली आहे. कोणाकडे खेचते आहे मला तर समजेल की दुःखी आहे. कोणी साधक. फार मोठा साधक असतो. एकदम हृदय खेचलं गेलं पाहिजे त्या व्यक्तिकडे आणि ही करूणा तुम्हांला सुमतिपण देते आणि स्मृतिसुद्धा देते. कारण नितकी निकटता करूणेमुळे येत, तेव्हाही दुसऱ्या कसल्याही नात्याने येत नाही. अशी विशेष गोष्ट आहे करूणा. आणि या करूणेमध्ये

स्वतः लीन करा. या ममत्वाला लीन करा. हा सहजयोगामध्ये उन्नतिचा मार्ग आहे. कारण मी कधी सांगितलं नाही. आपली मुलं सोडून द्या, घर सोडून घ्या. हा सहजयोग आहे. तुम्ही कसेही असला. कुठेही असला आंतल्याआंत वाढत जा. ते आंत पहिल्याशिवाय तर नाही होणार. तर मग असा विचार करायचा की काय मी करूणामय आहे कां? कोणाला जर कांही असेल, आणि त्याला सांगितलं यावेळी होऊ शकत नाही. खूप वाईट वाटून घेतात. म्हणजे सगळं ममत्व स्वतःच्याच बद्दल. मला काय मिळणार आहे? मी काय मिळवेन? मला काय लाभ होईल. पण ममत्व बाहेर नाही. कोणीही या दरोत, कसंही असूंदे करूणा आपला रस्ता स्वतःच शोधून काढते, खूप सुंदर रित्या आणि फार आनंददायी आहे करूणा मिळवणं. त्यांत वाहून जाणं. करूणामध्ये अनेक प्रकारची कार्ये होणे. आनंदायीतर आहे पण या आनंदात लोभ असत नाही की हा आनंद मला परतपरत मिळेल. त्याची जाणीव नसते, केलं. केलं. झालं. झालं. याच प्रकारे जसं कांही काम आहे. केलं.

आतां चौथी नाडी आपल्यामध्ये जी आहे, ती अत्यंत महत्त्वपूर्ण आहे. हृदयामध्ये ती चौथी नाडी, कुंडलिनीच्या जागरणानेच जागृत होते. आणि इतक्या विशुद्धीमधून निघून मस्तकांत जाऊन कमळाळा उमलविते. जेव्हा आपलं चित्त या सगळ्या गोष्टीमध्ये लीन होऊन जातं जसा कांही या कमळामध्ये जीव येतो, त्यामध्ये शक्ति येते किंवा असं समजा की, एक झाडावर पाणी पडलं तर ते जसं आपोआप वाढतं, त्याप्रमाणे असं शुध्द चित्त ज्या माणसाचं होतं, त्याच्या हृदयाची कळी उमलते आणि ते कमलरूप होऊन सहस्रावर आच्छादून राहतं. मग त्याचं तत्व, त्याचा सुगंध, चारी बाजूला पसरते. आणि अशी व्यक्ति एकदम नतमस्तक होऊन जाते. एकदम नतमस्तक होऊन सर्वांसमोर वाकून रहाते. कोणी जर त्याला म्हणाले की तुम्ही माझं मोठं काम केलं, मोठा चमत्कार केला तर ती गोष्ट त्याला स्पर्श करीत नाही. जशा आनंदाच्या लाटा बाहेर काढावर जाऊन नाद करतात पण परत येत नाहीत. त्याच प्रकारे ज्या व्यक्तीची ही स्थिती होते त्याचं सारं कार्य बाहेर नाद करतं. आवाज करतं. त्याचा परिणाम बाहेर दिसून येतो. काढावर त्याच्या आंतमध्ये त्याचा कांही परिणाम येत नाही. ध्यानही येत नाही. विचारही येत नाही. जे काही आपले निनाद आहेत ते दुसऱ्या काठाला जाऊन स्पर्श करतात. मला स्पर्श करीत नाहीत. मला येत नाहीत. त्यामुळे असं होऊ शकतं. आंत बसलेल्या देवीदेवता खुष होतात आणि त्या चैतन्य वाहून लागतात. किंवा काही तुम्ही माझा जयजयकार गात आहांत. कदाचित मी तिथे नसतेमुध्यां, जेव्हा आपण स्तुति गाता, खुष होतो, आपल्या आंतल्या देवतासुध्यां प्रसन्न होतात आणि आपल्यासाठी अनंत नाडयांमधून कितीतरी, जसे तेजःपुंज प्रकाशाचे किरण आपल्यामध्ये सोडतात. किती मेहनत करतात आपल्यासाठी. तर आपल्यासाठीपण आवश्यक आहे, की जर आपल्यासाठी एवढी मेहनत करतात. तर आपणही या शुध्दतेला मिळवले पाहिजे. तर पहिल्यांदा जे शरीर ज्याला आपण धिक्कारत होतो. त्याला आपण मानत नव्हतो, तेच शरीर एक यज्ञ होऊन जातं. यज्ञ म्हणजे असा की, आतां आपलं शरीर आहे, होतय त्रास, तर याला त्रास होणारच आहे, कारण हा यज्ञ आहे ना, चांगली गोष्ट आहे. ज्याप्रमाणे यज्ञासाठी काष्ठांचं जळणं आवश्यक आहे त्याचप्रकारे या शरीराचं चालणं देखील यज्ञामध्ये आवश्यक आहे.

सहजयोगामध्ये सर्वांत मोठी गोष्ट ही आहे की, हे जे कृतयुग सुरु झालं. तुमच्या पूर्वपुण्यांमुळे, आपल्याला नास्त त्रास तर काही होतंच नाही. सगळ्या गोष्टी समोर येऊन उभ्या राहतात. सगळ्या साक्षात्कार होत राहतो. तुम्ही म्हणतां चमत्कार होत आहे. सगळ्या गोष्टी तुम्हाला सुलभतेने मिळतात. तुमची बहुतेक कामं सरळ सहज होऊन जातात. शोभना सुलभा गति ! म्हणजे आपली शोभा आणि मान या प्रकारचा आहे; जीवनांत अत्यंत सुलभ रित्या आपण याला प्राप्त करू शकता. कोणतंही अशोभनीय काम करण्याची गरज नाही. तर ही एक प्रकारची एक फार सूक्ष्म मायासुद्धा आहे. यांत असा विचार करता नये की हे सगळे चमत्कार आपल्यासाठी होत आहेत कारण आपण कोणी फार मोठे सहजयोगी आहोत. पण असा विचार केला पाहिजे आपल्या अंतर्दामी परमात्म्याबद्दल, शिवाबद्दल, कुंडलिनीबद्दल विश्वास दृढ होईल. यांसाठी चमत्कार होत आहेत. आणि याला दृढ करण्याचं कारण हे आहे की, आपण आपल्या चित्ताला शुध्द करायला पाहिजे. कारण शिव चित्तस्वरूप आहे. त्यांच्या चित्ताच्या शक्तीला 'चित्ती' म्हणतात. ते चित्त आहे. म्हणजे, ज्या चैतन्याबद्दल आपण जाणता, त्या चैतन्याचं जे चित्त आहे तो श्री शिवांचा प्रसाद आहे. ते शिवाचं तत्व आहे. याचा अर्थ सान्या जगामध्ये त्याचं चित्त पसरलं आहे. आणि जेव्हा तुम्ही म्हणता, चमत्कार झाला, ही गोष्ट घटित झाली, तेव्हा हे जाणलं पाहिजे, हे जे चित्त आहे, ज्याला आपण चित्ती म्हणतो, त्याने हे कार्य केलं आहे. अणू, रेणू प्रत्येक गोष्टीत त्याचं चित्त आहे. पण चित्ताचा अर्थ असा होतो की ते साक्षी आहेत. पहात आहेत. आणि कार्यान्वित जे आहे ते ब्रह्मचैतन्य आहे. पण जसा संगीतकार समोर बघून वाजवितो, तशा प्रकारचं ब्रह्मचैतन्य आहे. चित्ताच्या दृष्टीला पाहूनच कार्यान्वित होतं. त्या चित्तीला ब्रह्मचैतन्य जाणतं. आणि या कार्याला तेव्हा करतो जेव्हा त्या चित्तीला बघून ते योग्य

समजतं. ब्रह्मचैतन्य देवीची शक्ति आहे आणि ती कार्यान्वित आहे आणि ती त्या बघणाऱ्याला जाणते आणि त्या शक्तीची पूर्ण वेळ हीच लीला आहे की त्या बघणाऱ्याला खूब ठेवायचं आहे. म्हणून कधी कधी तुम्ही म्हणता, की श्रीमाताजी अशी गडबड कां झाली ? अशांसाठी झाली की ती जी चिती होती त्याचं रूप बदललं होतं.

जर आपण आज शिवाची पूजा करित आहांत तर या मी ज्या चार नाड्या सांगितल्या त्यांच्याकडे लक्ष द्या. आणि ज्या प्रकारे मी तुम्हाला सांगितलं आहे, की कशा प्रकारे आपल्याला या चार गोष्टींमध्ये चित्ताला लीन केलं पाहिजे, ही कांही मोठी गोष्ट नाही पण सूक्ष्म आहे. आणि नंतर तुम्ही मला सांगा. या प्रकारे मन आंत करून स्वतः स्वतःला विचारा. तपस्या केली आहे. वार्तालाप केला आहे आणि जे आपल्या चित्ताला शुद्ध केलं आहे. त्यामुळे आपल्याला एकदम कळेल की तुम्ही शिवाच्या सागरामध्ये पूर्णपणे बुडून गेला होता. आणि अशा दशा आपणा सर्वांची व्हावी, अशीच माझी एक शुद्ध इच्छा आहे.